AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बिहार में वस्त्र उद्योग का विलुप्तिकरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
प्रो. (डॉ.) जयन्त कुमार सिन्हा
पर्यवेक्षक
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
राजेन्द्र मेमोरियल वीमेंस कॉलेज
नवादा (बिहार)

सीमा कुमारी
शोधार्थी
स्नातकोत्तर, इतिहास विभाग
मगध विश्वविद्यालय
बोध गया, बिहार, भारत

शोध सार

बिहार अपने सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा को अक्षुण्ण रखने के साथ–साथ कृषि उद्योग के क्षेत्र में अव्वल रहा है। जहाँ तक वस्त्र उद्योग का सवाल है, यह पूर्णतः कच्चे माल के लिए कृषि पर ही आधारित था। बिहार सहित भारतीय कृषक कपास की पर्याप्त मात्रा में खेती करते थे। उन्हीं कपासों से सूती कपडों के लिये धागे का निर्माण होता था। ऐसे वस्त्र उद्योग यहाँ की प्राचीनतम उद्योग है। सूती वस्त्रों के साथ–साथ रेशमी वस्त्रों के लिए कच्चे माल की उपलब्धता होने के कारण यहाँ रेशमी वस्त्रों का भी निर्माण होने लगा। सूती वस्त्रों के लिए बिहार का मेनचेस्टर गया स्थित मानपुर का पटवा टोली और रेशम वस्त्र के लिए भागलपुर प्रमुख हैं। यहाँ के निर्मित वस्त्र देश के कोने–कोने में बिक्री होता है। यहाँ उत्पादित वस्त्रों में लुंगी, चादर के साथ रेशमी और ऊनी वस्त्रों का भी निर्माण होता है। वस्त्रों को तैयार करने के लिए कई छोटी–छोटी मिले है। कच्चा माल कानपुर एवं अहमदाबाद से आता है। ऐसे रेशमी वस्त्रों के लिए भागलपुर प्रसिद्ध है। इस वस्त्रों के उत्पादन एवं कार्य–प्रणाली को देखने के लिए हस्तकरघा एवं रेशमी वस्त्र निदेशालय बनाया गया है। कालांतर में इस उद्योग का विस्तार बिहार के भागलपुर के अलावा मुजफ्फरपुर, गया एवं दरभंगा में भी होने लगा। इतना ही नहीं इस निदेशालय के अधीन भुआ में बनारसी साड़ी के मिले हैं। संभवतः इस क्षेत्र में इस उद्योग का प्रभाव वाराणसी के कारण पड़ा। आर्थिक उदासीनता के कारण कई मिलों की स्थिति विलुप्तिकरण की ओर है।

मुख्य शब्द

वस्त्र उद्योग, रेशम उद्योग, मलवरी, तसर, व्यापार, विलुप्तिकरण.

भूमिका

बिहार मे वस्त्र उद्योग के बड़ी–बड़ी मिलें नहीं है, लेकिन प्रारंभिक समय में यहाँ गया में स्थित मानपुर का पटवा टोली गॉव पूरे देश–विदेश में बुनकरों के गाँव के नाम से जाना जाता था। इन बुनकरों द्वारा निर्मित कपड़ों की माँग अपने देश के साथ–साथ विदशों तक था। आज यह बुनकरों का गाँव अपनी बेबसी और आर्थिक लाचारी की वजह से संकट के दौर से गुजर रहा है। यहाँ 24 घंटे पावरलूम के खटखट की आवाजें आती रहती थी। यहाँ

मूलतः सूती वस्त्र ही ज्यादा बनते थे। तकनीकी रूप से इस उद्योग का विकास नहीं होने के कारण भी यह पिछड़ रहा है साथ ही इन बुनकर समाज के लोग अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसाय को करने लगे है। खासकर नई पीढ़ी में इस उद्योग के प्रति आकर्षण नहीं के बराबर है। एक वजह यह भी है कि नई तकनीक वाली पावर लूम मशीनों की कमी, आमद कम और सरकार द्वारा प्रोत्साहन नहीं दिया जाना भी शामिल है।

प्रस्तुत शोध पत्र का अहम सवाल यह है कि आखिर क्यों नई पीढ़ी इस धंधे से दूर होते जा रहे हैं? सच कहा जाय तो पटवा टोली में कुछ नहीं बदला है। सब कुछ वही पुरानी चीजें और पुरानी तकनीक है। नतीजन लोगों की सोच अब इस पुश्तैनी उद्योग–धंधे से उचटने लगी है। नई पीढ़ी इस रोजगार में आना नहीं चाह रही है। अब पहले जैसी बात नहीं है। महंगाई और कच्चे माल की कमी के कारण उद्योग को चलाना कठिन हो गया। ऐसे यहाँ के बुनकर अपने व्यवसाय के लिए दूसरे राज्यों यथा गुजरात और अन्य क्षेत्रों में जाने को मजबूर हैं या दूसरे व्यवसाय को ही अपनी जीविका का साधन बना रहें हैं।[2]

बिहार का मैनचेस्टर पटवा टोली

मानपुर का पटवा टोली जिसे बिहार का मैनचेस्टर और मिनी कानपुर का दर्जा प्राप्त था। यहाँ करीब 12000 पावरलूम और 2000 हैं डलूम मशीनें संचालित है किन्तु नई तकनीक नहीं आने के कारण अपेक्षित विकास इस उद्योग का नहीं हो पाया है। यहाँ रोजगार की अपार संभावनाओं के बाद भी इन बुनकरों को संघर्ष की नौबत आ गई। सरकार की ओर से प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहायता दी गई होती तो संभवतः इस तरह के आर्थिक संकट से जुझने की परिस्थिति नहीं बनती। इन अभावों के बाद भी यहाँ के बुनकर अपने परम्परागत व्यवसाय से अपने जीवन व्यतीत कर रहे है।

आज से करीब तीन दशक पहले बिहार में कई धागा की मिलें थी। इससे सस्ता धागा कच्चा माल के रूप में उपलब्ध था अब वह स्थिति नहीं है। दूसरे राज्यों से मँहगें धागे मंगाने पड़ रहे है। इसका सीधा असर उद्योग पर पड़ रहा है। इससे निर्मित वस्त्रों के मूल्य पहले की अपेक्षा बढ़े हैं। इन बुनकरों के साथ मजबूरी है कि बाजार में सस्ते दरों पर बने वस्त्र बहुत मामुली आमदनी पर बेचने के लिए विवश होना पड़ रहा है। पहले मानपुर में ही पावर लूम सर्विस सेंटर और रेशम सेवा केन्द्र थे, जो सब धीरे–धीरे अब समाप्त होते चले जा रहे हैं। ऐसे नई पीढ़ी इस उद्योग में रूचि नहीं ले रहे हैं। सीमित संसाधनों में सिमट रहे बुनकरों के सूती वस्त्र के उद्योग को नई पीढ़ी अपने कैरियर के रूप में नहीं देख रहे हैं।[3]

बिहार में सूती व रेशमी वस्त्र उद्योग पिछड़ने का एक बहुत बड़ा कारण नई तकनीक वाली मशीनों का पर्याप्त मात्रा में नहीं होना। पूर्व से स्थापित पुरानी मशीनें जो चल रही है उससे अच्छे किस्म का वस्त्र निर्माण नही हो रहा है। बाजार में ऐसे वस्त्रों का कम दाम मिल रहा है, जिसका सीधा असर बुनकरों पर पड़ रहा है। बहुत सारे मशीन बंद पड़े है। उसे मरम्मत नहीं कराने के कारण बेकार पड़े जबकि दूसरे राज्यों में नवीन तकनीकी से वस्त्रों का उत्पादन हो रहा है। बिहार को कच्चा धागा के लिए पंजाब या भारत के दक्षिण राज्यों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। यदि इन कच्चे मालों की उपलब्धता पहले की तरह होता तो इतना संघर्ष नहीं करना पड़ता। सरकार को इस दिशा में सोचना चाहिए था लेकिन उदासीन रवैये की वजह से बिहार का यह मैनचेस्टर विलुप्तिकरण के कगार पर खड़ा है। खासतौर से बुनकर अपने बल–बुते इस पटवा टोली से निर्मित वस्त्रों को तैयार कर यहाँ के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए एड़ी–चोटी एक किये हुए है।[4]

इतना ही नहीं बल्कि मानपुर (गया) का यह पटवा टोली बिहार का आई. आई आई टीयन (IITian) गाँव के नाम से भी मशहूर हैं। यहाँ से प्रत्येक वर्ष दर्जनों से अधिक छात्रों का सलेक्शन आई. आई. टी परीक्षा में होता है। खास बात यह है कि यहाँ रहने वाले छात्रों को तैयार करने का काम वृक्ष (Vriksh) नामक संस्था कर रही है। इस तरह गरीब तबके के छात्र यहाँ आकर आई. आई. टी. एन. बनने का सपना साकार कर रहे हैं। तंग गलियों वाले इस गाँव में घुसते ही वस्त्रों की बुनाई करने की आवाज सुनाई देती है। इसी गलियों में बने कमरों में आई. आई. टीयंस की पौध भी तैयार हो रही है। 2013 से संचालित वृक्ष संस्था को आई. आई. टी. ग्रेजुएट्स की फंडिंग से

चलाया जा रहा है। यह संस्थान छात्रों को इंजीनियरिंग से जुड़ी किताबें उपलब्ध कराते हैं। देश के नामचीन शिक्षक इस संस्था से जुडे है जो इस क्षेत्र में अभिरूची रखने वाले छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा भी प्रदान कर रहें हैं। इस संस्था के संचालक चंद्रकांत पाटेकर का मानना है कि जगह छोटी या बड़ी से नहीं है बल्कि लगन और मेहनत यदि ईमानदारी पूर्वक किया जाय तो मुकाम तक पहुँचना आसान होता है।

बेटर इंडिया के सर्वे प्रतिवेदन के अनुसार विगत 25 वर्षों से इस गॉव (पटवा टोली) में करीब 300 इंजीनियरिंग छात्रों ने अपनी पढ़ाई पूरी कर विभिन्न मानक प्रतिष्ठानों में कार्यरत हैं। इसकी शुरूआत 1991 में इस गाँव के बुनकर के बेटे जितेन्द्र पटवा का चयन पहली बार आई. आई. टी. में हुआ। एक दौर ऐसा भी था जब यह गाँव आर्थिक तंगी का शिकार रहा उससे सबक लेते हुए गाँव वालों ने बच्चों को इंजीनियर बनाने की ठानी। जितेन्द्र पटवा की सफलता ने गाँव वालों की आशा को मजबूती प्रदान की। गाँव के छात्रों के सपने पूरे हो इसके लिए जितेन्द्र ने एक ग्रुप बनाया और नाम दिया नब स्किल प्रयास। शुरू में इसके माध्यम से छात्रों को मदद मिली। 1999 में सात और छात्रों को सफलता मिली। इन सभी छात्रों ने अपनी नौकरी के साथ–साथ गाँव के इस एजुकेशन मॉडल के लिए आर्थिक सहायता की। एक काँरवा बनता गया और आज यह छोटी जगह आई आई टीयन तैयार करने की फैक्ट्री बन गया। नतीजा यह हुआ की कालांतर में नई पीढ़ी के बच्चों का रूझान पढ़ाई के प्रति ज्यादा हो गया और वे अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़ते चले गये। उसमें से कुछ बुनकर हैं जो वस्त्रों के निर्माण कार्य से जुड़े हैं।[5]

वस्त्र उद्योग बुनकर सेवा समिति के अध्यक्ष प्रेम नारायण पटवा का कहना है कि एक ओर सरकार औद्योगिक क्षेत्रों को विकसित करने की बात करती है वहीं दूसरी ओर व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाय तो करीब 5 वर्षों से अधिक समय से औद्योगिक क्षेत्र के लिए चयनित हुए स्थान पर शिलान्यास तक नहीं किया गया। पटवा टोली (मानपुर) को औद्योगिक क्षेत्र के लिए शादीपुर के पास भूमि का चयन हुआ है। आज इन बुनकरों के पास सिर्फ पुरानी मशीनें है। इन्ही मशीनों से यहाँ के बुनकर अपने व्यवसाय को जीवित रखे हुए हैं क्योंकि उनकी जीविका का यह एकमात्र साधन है। यहाँ के निर्मित सूती कपड़ो के साथ–साथ गमछा का निर्माण अधिक होता है। आज मँहगाई के दौर में भी मानपुर पटवा टोली के बने गमछे 40 रुपये तक मिल जाते हैं। बिहार सहित पूरे देश के गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर लोग इसे खरीदते हैं।

गया (मानपुर) के पटवा टोली में काम कर रहे बुनकरों के वार्त्तालाप से पता चलता है कि यहाँ के बने वस्त्र पूरे भारत में जाते हैं। करीब 60% वस्त्र पश्चिम बंगाल, 15% वस्त्र असम, शेष झारखंड, उड़ीसा और बिहार में खपत होते हैं। यहाँ करीब 400 करोड़ का सालाना कारोबार है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक इस उद्योग के विभिन्न कामों में करीब 25000 लोग जुड़े हैं। इस उद्योग में अब सिर्फ पुराने लोग ही रह गये है जिससे कारोबार में गिरावट आयी है। बैंको से समय पर ऋण नहीं मिलना एक बड़ी वजह है। इस उद्योग में पावरलूम में मजदूरी 350 रुपये निर्धारित थी जो आजतक कायम है। यहाँ काम करने वाले मजदूर शिव प्रसाद, अजय प्रसाद बताते हैं कि करीब 10 घंटे काम करने के बाद यह मजदूरी मिलती है। हाल के दिनों में इसे 400 रुपये किया गया है, जो कम है। इन छोटी–सी राशि से घर चलाना मुश्किल है। एक तरह से यह कहा जाय कि मजदूरों के अन्दर आर्थिक तंगी के दंश भी इस उद्योग का विलुप्तिकरण की बड़ी वजह है। सरकार को ऐसी स्थिति में यहाँ के मिल मालिकों को आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि यहाँ बन रहे सूती वस्त्रों के अस्तित्व को बचाया जा सके। यह सिर्फ बुनकरों के लिए ही नहीं सरकार के लिए भी चुनौती से कम नहीं है, क्योंकि सैद्धांतिक रूप से सरकार उद्योग लगाने की बात करती हैं, लेकिन व्यवहारिक पटल पर इस दिशा में काम नगण्य है। यहाँ तक कि पूर्व में स्थापित उद्योगों को यदि बंद होने से बचा लिया गया होता तो आज बिहार को आर्थिक संकट झेलना नहीं पड़ता।[6]

एक ऐसा भी समय था जब नालन्दा जिले के बिहार शरीफ का नाम राष्ट्रपति भवन से लेकर देश दुनिया में था। हस्तकला का परचम फहराने वाले इस जिले के बसबन बिगहा गाँव के बुनकर अपनी आर्थिक बदहाली पर आँसू बहाने को विवश है। सरकार के उदासीन रवैये की वजह से यहाँ इस प्रकार की स्थिति है। समस्या से निपटने के लिए 1980 में बुनकरों ने एक समिति का गठन किया ताकि बुनकरों को आर्थिक सहायता पहुँचाया जा सके। यहाँ

के निर्मित परदे राष्ट्रपति भवन के दरवाजे की शोभा बढ़ाने का काम आती है। स्वाभाविक रूप से इन वस्त्र कारीगारों को रोजगार तो मिला ही साथ अन्य मजदूरों को भी इसमें काम करने का अवसर मिला। उत्पादन कम होने के कारण अधिकांश बिक्री केन्द्र बंद हो गये हैं।

वर्त्तमान समय में अब कुछ ही बुनकर बचे हैं जो अपने सहयोग से इन हस्तकला को जीवित रखें है। यहाँ के कुशल कारीगरों को राष्ट्रपति से पुस्कृत किया गया है। ऐसे अभी तक 'मिनी सूरत' को साड़ियों के निर्माण के लिए गुजरात को जाना जाता था लेकिन बिहार के 'मिनी सूरत' नालन्दा के मुख्यालय बिहार शरीफ के सोहस राय में हैं। यहाँ की बनी साड़ियाँ बिहार सहित अन्य प्रदेशों में भेजे जाते हैं। यहाँ हर तरह की साडियाँ बनती है। करीब 250 बुनकर परिवारों के जीविका का साधन साड़ी उद्योग है। साथ ही बिहार में खादी कपड़ो का निर्माण मुस्लिम बुनकर करते हैं। यहाँ के बने कपड़े मजबूत और सस्ते दरों में मिलती हैं।[7]

रेशम उद्योग के लिए भी दो दशक पूर्व मानपुर का नाम था। यहाँ की बनी रेशम साड़ी, कुर्त्ता एवं अन्य वस्त्रों को लोग बेहद पसंद करते थे। उनकी मांग पूरा करने के लिए पटवा टोली और रेबाड़ टोली से करीब 70 हस्तकरघा पर रेशम के वस्त्र तैयार होते थे। आज आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से कुछ बुनकरों को छोड़कर रेशम के कपड़े बनाने का मिल बंद हो चुके हैं। यहाँ विभिन्न तरह के रेशमी कपड़े बनते हैं। मधुबनी, बिहार, झारखंड के जंगली इलाका में तैयार होने वाले रेशम के कीड़े से मानपुर में कपड़े बनते हैं।

बिहार के भागलपुर एवं बांका में सिल्क के चादर और तसर के कपड़े बनते हैं। हस्तकरघा उद्योग से बांका का पुराना नाता है, यहाँ कई ऐसे गाँव हैं जहाँ हस्तकरघा से रेशम के कपड़े निर्माण होते हैं। इसी रोजगार से उनका रोजी–रोटी चलता है। यह उनके पुश्तैनी कारोबार का हिस्सा है। बांका तसर और सिल्क के कपड़ों की बुनाई के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि अब हस्तकरघा की जगह हैं डलूम और पावरलूम ने ले लिया है। इसी जिले के अमरपुर प्रखंड के कटोरिया के प्रत्येक घर में वस्त्र का निर्माण होता है। बिहार के मधुबनी में भी बुनकरों द्वारा सूती कपड़ों का निर्माण होता है। पूरे देश के साथ विदेशों में भी भागलपुरी चादर की मांग है। यहाँ निर्मित चादर की गुणवता और मजबूती का जोड़ कहीं नहीं है।[8]

निष्कर्ष

बिहार के उद्योग धंधों को विकसित करने की दिशा में काम चल रहा है शर्त सरकार की सही मंशा हो। 1922 में बिहार के उद्योग मंत्री के पहल पर कुछ पुराने मिलों को आर्थिक अनुदान दिये गये हैं, ताकि पूर्व में स्थापित इन मिलों से कपड़े का निर्माण हो सके। यहाँ संसाधनों की कमी नहीं है, सिर्फ कमी है तो इच्छा शक्ति की। इसके विलुप्तिकरण को रोकने के लिए मिल मालिकों, बुनकरों और सरकार की नीतियों में सुधार की आवश्यकता है। हस्तकरघा उद्योग को नया आयाम देने के लिए 'हथकरघा से आत्म निर्भरता' का नारा दिया है। इस दिशा में नाबार्ड के जिला प्रबंध अमृत बरनवाल के पहल पर हथकरघा को सांस्कृतिक विरासत के रूप में स्थापित करने का प्रयास है ताकि भविष्य में बिहार वस्त्र उद्योग में अव्वल हो सके साथ ही नालन्दा जिले की बावन बूटी साड़ी चादर और पर्दे की लोकप्रियता देश एवं विदेशों में है। इसी कारोबार से यहाँ के लोगों की रोजी–रोटी चलता है। विगत वर्ष यहाँ के बुनकर कपिल देव प्रसाद उत्तम कारीगार के वस्त्र निर्माण के लिए भारत सरकार कपड़ा मंत्रालय द्वारा पद्म श्री का सम्मान दिया गया है। बहुत सारी महिलाएँ भी इस कार्य में लगी है। यहाँ के बुनकरों की स्थिति संतोष जनक है। यदि सरकार बिहार में लगे पूर्व के उद्योगों को चालू रखने में सक्षम होती तो यहाँ का आर्थिक विकास दर और बेरोजगारी में कमी अवश्य दिखती। यूँ कहा जाय कि व्यवहारिक रूप से सरकार की योजनाएँ काम करती तो निश्चित रूप से बिहार सूती, रेशमी वस्त्रों के निर्माता हब के रूप में होता। विभिन्न प्रकार की कमियों के बाद भी यहाँ के बुनकर अपने व्यवसाय को बचाने में लगे हैं। यह उनकी लाचारी भी हैं क्योंकि इसी कार्य से उनकी रोजी–रोटी का संबंध जुड़ा है।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय, अंशुमान (1980) *''बिहार के उद्योग''* ओम बुक्स इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ आर्ट, लखनऊ, पृ. 51
2. प्रभात खबर दैनिक समाचार पत्र, 2010 संपादकीय, पृ. 8।
3. हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र मगध संस्करण, 2015।
4. मानपुर (गया) पटवा टोली के सूती वस्त्र व्यवसायी उदयशंकर प्रसाद से साक्षात्कार के आधार पर 05.05. 2024।
5. गोपाल प्रसाद पटवा इंडस्ट्रियल एरिया अध्यक्ष गया, 05.05.2024 (साक्षात्कार)।
6. वर्मा, प्रमिला (1981) *''वस्त्र विज्ञान एवं परिधान''* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 21।
7. बिहार सरकार उद्योग मंत्रालय से साभार–2022।
8. हथकरघा एवं रेशम निदेशालय बिहार का रिपोर्ट–2022

––==00==––